जो जाने वाले है उन्होंने अपना अनुभव सुनाया। एक तो सुनाते होंगे हम यहाँ आये है बेहद केबाप से बेहद का वर्सा लेने। यह है बाप का घर। ब्रह्मा की सन्तानशिव बाबा से वर्सा लेने आते है। वर्सा ब्रह्मा से नही मिलता है। शिवबाबा से वर्सा मिलता है। ब्रह्मा कुमारी भी बाप का कई परिचय देती है। इतने ढेर ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ है तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा। और कौन होगा? ब्रह्मा दवारा ब्राह्मण ही रचेंगे। रचता और रचना की आद मध्य अन्त को कोई भी नही जानते। यह है भी राजयोग। राजाई प्राप्त हुई सतयुग स्थापन हुआ फिर नालेज खत्म। यह मिलती ही है संगमपर। इनको पुरूषोत्तम संगम युग कहा जाता है। मनुष्य फिर पुरूषोत्तम मास भी मानाते है कोई-2 समय होता जब कि पुरूषोत्तम मास वा पुरूषोत्तम वर्ष कहा जाता है। पुरूषोत्तम युगका तुम ब्राह्मणों केसिवाय कोई को भी पता नही है। पुरूषोत्तम से पुरूषोत्तम होते ही है देवतायें। यह लक्ष्मी नारायण भी उत्तम पुरूष है नाँ। नारी लक्ष्मीऔर नर नारायण। यही एम आबजेक्ट ही यह है। बाबा हमको पुरूषोत्तम बनाते है। यह है नम्बरवन स्वर्ग की जीवन मुक्ति सबसे पुरूषोत्तम। फिर राजा रानी प्रजा सबको पुरूषोत्तम कहा जाता है। देवी देवताओं का बहुत ऊँच धर्म है। इनकी महिमा भी है। इसलिये ही पुरूषोत्तम और पुरूषोत्तमनी कहा जाता है। अब यह कहाँ गये क्या हुआ यह कोई को कुछ भी पता नही है। तुम बच्चे जानते हो यह पुनर्जन्म लेते सतोप्रधान से सतो रजो तमो में आते है। इनको देवता भी कहा जाता है। यह 84जन्म लेते-2 फिर असुर बन जाते फिर देवता बनते है। पहले-2 बाप की पहचान देनी है। एक तो है लौकिक बाप। दूसरा पारलौकिक परमपिता परमात्मा उनका नाम शिव बाबा है। गाया भी जाता है शिव परमात्मायै नमः। बेहद का बाबा हुआ नाँ। प्रजापिता ब्रह्मा भी बाबा हुआ। लौकिक भी बाप है। ऊँच ते ऊँच हुआ शिव बाबा। ब्रह्मा तो वर्सा दे नही सकते। ब्रह्मा विष्णु शंकर के ऊपर है परमपितायै नमः। उनको देवतायै नमः कहेंगे। देवतायें है रचना। रचना से वर्सा नही मिल सकता। रचता परमपिता परमात्मा है बेहद का। वो आते ही है भारत में। शिव जयन्ती भी भारत में ही मनाते है। मनुष्यों को तो पता ही नही है। बाप को कब सर्वव्यापी थोड़ेई कहा जाता जाता है। वो बाप दुख हरता सुख करता है तो आना ही पड़ेगा। बाप तुमको राजयोग सिखा कर विश्व का मालिक बनाते है। राजयोग मशहूर है। सर्वशास्त्र मयी शिरोमणी है गीता। गीता सभी भाषाओं में है। गीता में है भगवानोवाच्य मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। अब निराकार परमात्मा राजयोग कैसे सिखावेंगे। और है भी ज्ञान का सागर। बोलो बाप आये है ब्रह्मा दवारा रचना रचते है ब्रह्मा कुमार कुमारियों की। रचना कैसे रचे? एडाप्ट किया। तुम सब ही एडाप्टिड बच्चे हो। यह दोनों बाप दादा इक्ट्ठे है इसलिये हमेशा पत्र भी लिखो तो बाप-दादा। शिव बाबा केयर आफ ब्रह्मा। बाप-दादा अक्षर याद कर लेना चाहिये। वर्सा ब्रह्मा कुमार कुमारियों को मिलता है शिव बाबा से। बाप कहतेहै मैं साधारन तन में प्रवेश करता हूँ। वर्सा मिलता है बाप से। सन्यासी किसीको बाप कह नही सकते है। लौकिक बाप का तो सन्यास कर दिया। उनका नाम भी नही सुनावेंगे। अच्छा बोलो आत्माओं का बाप? तो भी सर्वव्यापी कह देते है। उनका बाप है ही नही। आरगू बहुत करेंगे। तुम कोई सेभी आरगू मत करो। बोलो दो बाप है नाँ। लौकिक और परलौकिक वो ज्ञान का सागर है। आकर राजयोग सिखाते है। कृष्ण को भगवान नही कहा जाता। शिव भगवानोवाच्य। शिव निराकार होंगे वो किसके तन में आवे? यह बातें तुम समझ और समझा सकते हो। हम बाप को याद करते है निरन्तर। जानते है अन्त मते सो गते होजावेगी। तुम इस एक माशूक के आशिक हो। भगवान एक है। सब दुःख में उनको याद करते है। क्यों कि भगवान को ही आकर सदगती करनीहै। बाबा कहते है और कोई से नही सुनो। किसीको देखो भी नही। एक बाप को याद करो। वो हीहै पतित पावन। उनको याद करने से तुम पावन बन कर पावन दुनिया में चले जाओगे। तुम भक्ति करते थे अब नही करते हो क्यों कि शिवभगवानोवाच्यः- सर्व का सदगती दाता मै हूँ। मुझे याद करो तो तुम चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। पावन भी बनना पड़े। पतित कहाजाता है विकारी को। क्रोधी लोभी को पतितनही कहेंगे। ओम